शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

सरकार एक गैर जरूरी संस्था

विनोबा

हमारा मुख्य विचार है कि सारी दुनिया को सरकारों से ही मुक्ति मिले। आज सारी दुनिया अगर किसी रोग से पीड़ित है, तो वह इस सरकाररूपी रोग से पीड़ित है। आज राम-नाम की जगह 'सरकार' नाम ने ले ली है। 1947 से हम लोग आज ज्यादा गुलाम बन गये हैं। लोग समझते हैं कि हमें कुछ करना-धरना तो है नहीं, जो कुछ करना है, सरकार को ही करना है। आज कुल दुनिया में एक भ्रम फैला हुआ है कि सरकारों के कारण हम बचते हैं, अगर सरकार नहीं होती, तो हम बच न पाते। दुनिया के लोगों को यह भ्रम है कि सरकार के बिना हमारा काम चल नहीं सकता। हम यह समझ सकते हैं कि लोगों का काम खेती के बिना नहीं चलेगा, उद्योगों के बिना नहीं चलेगा, प्रेमभाव के बिना नहीं चलेगा, धर्म के बिना नहीं चलेगा। हम यह भी समझ सकते हैं कि यदि शादी की विधि न हो, कुटुंब-व्यवस्था न हो, तो लोगों का काम नहीं चलेगा। लेकिन ऐसी वस्तुओं में हम सरकार की गिनती नहीं करते।

वास्तव में जनता को सरकार की कोई जरूरत नहीं है। वह तो एक समाज के प्रवाह में चीज बन गयी। समाज में एकरसता निर्माण करने में हम समर्थ सिद्ध नहीं हुए। समाज में अनेकविध भेद पड़ गये। हमें अविरोध से काम करने का पूरा शिक्षण नहीं मिला। उसके बदले हम राज्यसत्ता से काम लेना चाहते हैं। जो काम लोगों को शिक्षित करने से हो सकता है, उसे हम दंडशक्ति से करना चाहते हैं।

शासन से भयवृद्धि

जब तक हम दुनियाभर के सब लोग ये सारी सरकारें अपने सिर पर उठाये रहेंगे, तब तक काम नहीं बनेगा। क्योंकि आज चंद लोग समझते हैं कि हम करोड़ों लोगों के लिए जिम्मेवार हैं और वे करोड़ों लोग भी समझते हैं कि ये लोग ही हमारी रक्षा करते हैं। इसीलिए उनके चित्त सदा भयभीत रहते हैं। जहां चित्त भयभीत होता है, वहां सारा दारोमदार सेना पर आ जाता है और सेना पर जितना भार रखा जाता है, उतना भय बढ़ता है।

बड़े-बड़े देश शस्त्रास्त्र-सामग्री बढ़ाने में लगे हैं। रावण के पास भी बहुत शस्त्रास्त्र थे, लेकिन वह निर्भय नहीं था। यही हालत आज दुनिया की है। जिनके पास ज्यादा शस्त्रास्त्र हैं वे भी डरते हैं और जिनके पास कम शस्त्र हैं, वे भी डरते हैं। इस तरह कुल दुनिया भयग्रस्त है। यह सारा भय सरकारें पैदा करती हैं। आज तो दुनियाभर की सरकारों का यही धंधा है कि जनता में यह भय पैदा किया जाये कि बाहर से आक्रमण होगा। वे लोगों को भास कराते हैं कि उनकी सेवा के लिए लोग बिल्कुल अनाथ और खतरे में पड़े हैं। इसका नाम है सरकार की रक्षणशक्ति! - **तीसरी शक्ति, विनोबा साहित्य, खंड 16**